शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2013

राष्ट्रीय एकता : अध्यापक की भूमिका

डॉ. बलबीर सिंह जामवाल,
प्रिंसीपल, बी. के. एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बलाचोर,
जिला एस. बी. एस. नगर, (पंजाब)

शोध संक्षेप

राष्ट्रीय एकता को देश की प्रगति का मूलमंत्र मानने वाले स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पं. जवाहर लाल नेहरू ने अपने देशवासियों को एक संदेश में कहा था– ''हमें अपने देश की नवजात स्वतंत्रता को सफल बनाना और सुरक्षित रखना अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य समझना चाहिए। यदि हम अपने समूह, अपने राज्य, अपनी भाषा या अपनी जाति के समान किसी अन्य बात को महत्त्व देंगे और अपने देश को भूल जाएंगे तो हमारा विनाश अवश्यम्भावी है। इन बातों का हमारे जीवन में उचित स्थान होना चाहिए परन्तु यदि हम इनको अपने देश से अधिक महत्त्व देंगे तो हमारा अंत अवश्य है।'' राष्ट्रीय एकता की भावना एक सच्चे समाज सेवक को राष्ट्र के उत्थान के लिए अपना सब कुछ अर्पित करने की प्रेरणा देती है। इस भावना से अभिभूत होकर एक सच्चा देश का सिपाही अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए हंसते–हंसते अपना बलिदान देने के लिए हमेशा तैयार रहता है। हमारा राष्ट्र भाषावाद, क्षेत्रवाद और संकीर्ण मानसिकता से प्रेरित होकर अपने देश की अखण्डता के लिए खतरा बना हुआ है। देश के निवासियों, राजनेताओं, समाज नेताओं को अपने देश की अखण्डता व एकता से पहले अपने नितान्त व्यक्तिगत स्वार्थ आने लगे हैं जो देश की राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बनते जा रहे है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बनाए रखना आज की आवश्यकता बन गई है। हमारे शिक्षक वर्ग, समाज नेताओं व राजनेताओं को इसमें पूर्ण योगदान देना चाहिए और संकीर्णता की भावना को त्याग देना चाहिए, तभी देश की अखण्डता व एकता बनी रहेगी और खतरा दूर किया जा सकता है, क्योंकि आज संपूर्ण विश्व राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित है।

भूमिका:

आजकल प्रत्येक देश या राष्ट्र कई समस्याओं से जूझ रहा है जिसका मुख्य कारण विज्ञान व तकनीकी का दुरुपयोग है। समाज की सेवाओं के लिए ही विज्ञान व तकनीकी ने तरक्की की थी परन्तु इस उन्नति का दुरुपयोग होना शुरू हो गया है जिसके कारण सामाजिक मूल्यों का हनन हो रहा है। इंसानियत खत्म होना शुरू हो गई है। हर व्यक्ति स्वार्थ की भावना से कार्य कर रहा है। सच्चाई व ईमानदारी तो अब दूर की बात बन गई है। हर देश दूसरे देश को नीचा दिखाने में लगा है। इसी तरह हर मानव दूसरे मानव को नीचा दिखाना ही अपना कर्त्तव्य समझने लगा है। हर व्यक्ति का ईश्वर, मान सब कुछ पैसा ही बन गया है। देश में जमाखोरी, बेईमानी, झूठ आदि एक फैशन बन गया है। विश्वभर में मानी जाने वाली भारतीय संस्कृति को भूलता जा रहा है तथा दूसरी संस्कृति को बिना सोचे समझे अपनाता जा रहा है। इस पैसे के लिए इंसान अपनी मर्यादा को भी भूल रहा है। भारत की स्वतंत्रता के लिए व इसकी एकता को वापस लाने के लिए हमारे देश के शहीदों की कुर्बानियों को भूलना शुरू हो गया है। हमें इन कुर्बानियों को भूलना नहीं चाहिए बल्कि हमेशा याद रखकर इनसे शिक्षा लेनी चाहिए। अब तो राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को खतरा बनता जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य भी है कि वह राष्ट्र की अखण्डता को बनाये रखने में पूर्ण सहयोग करे और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाये रखे। राष्ट्र को शक्तिशाली व पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना अति आवश्यक है। यह भावना शिक्षा के माध्यम से

ही विकसित हो सकती है जिसमें शिक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय देश प्रेम या देश भक्ति की भावना से है। जब किसी देश या राष्ट्र के निवासी धर्म, जाति, क्षेत्र व भाषा आदि की विभिन्नता को भूलकर केवल देश प्रेम या भक्ति की बात करते हैं, सोचते हैं तो उसे उस देश के निवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना कहा जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकता में देश भक्ति व देश प्रेम निहित होता है तथा समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है। जब मानव जाति–पाति, धर्म, प्रान्तवाद व व्यक्ति हित को छोड़कर राष्ट्र को सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाते हैं व राष्ट्र के लिए योगदान देते हैं तो यही राष्ट्रीयता व राष्ट्रीय भावना कहलाती है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, ''यदि भारत को स्वतंत्र, संगठित एवं लोकतंत्रात्मक रहना है तो शिक्षा को एकता का प्रशिक्षण देना चाहिए, स्थानवाद को नहीं, प्रजातंत्र को शिक्षण देना चाहिए, अधिनायकवाद को नहीं।''

डॉ. जे.एस. वेदी के अनुसार, ''देश के विभिन्न राज्यों के व्यक्तियों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषा विषयक विभिन्नताओं को वांछनीय सीमा के अन्तर्गत रखना और उनमें भारत की एकता का समावेश करना।''

रास के अनुसार, ''राष्ट्रीयता एक मानव प्रेरणा है जिससे प्रभावित होकर एक देश के रहने वाले आपस में एक दूसरे से एक राष्ट्र के नागरिक होने के नाते सद्भावना रखते हैं और मिलजुल कर राष्ट्र हित में कार्य करते हैं।

ब्रूवेक्र के अनुसार, ''राष्ट्रीयता साधारण रूप से देश प्रेम की अपेक्षा देश भक्ति के अधिक व्यापक क्षेत्र की ओर संकेत करती है। राष्ट्रीयता में स्थान के सम्बन्ध के अलावा प्रजाति, भाषा, इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं के भी सम्बन्ध आ जाते हैं।''

संक्षेप में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय राष्ट्र के विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों के हित में राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्र शक्ति की भावनाओं की एकता, राष्ट्रीय एकता है।

राष्ट्रीय एकता में शिक्षक की भूमिका

यह सच ही कहा गया है कि राष्ट्र को शक्तिशाली व पूर्ण आत्मनिर्भर बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना अति आवश्यक है। परन्तु यह राष्ट्रीयता की भावना केवल शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक वर्ग ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करने के लिए शिक्षक या अध्यापक की निम्नलिखित भूमिका होनी चाहिएः

1. **पूर्ण आस्था :** अध्यापक की भावनात्मक व राष्ट्रीय एकता के लिए विचार एवं दर्शन में पूर्ण आस्था होनी चाहिए, तभी अपने विद्यार्थियों में इस भावना का विकास कर सकता है। शिक्षक ही इस भावना को बच्चों में विकसित करता है।
2. **राष्ट्रीय मूल्यों का विकास :** अध्यापक का जीवन अच्छे मूल्यों पर आधारित होता है। वही अच्छा अध्यापक कहलाता है जिसमें अच्छे मूल्य होते हैं और वही विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करके राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करता है।
3. **उचित वातावरण तैयार करना :** अध्यापक स्कूल में एक अच्छा व उचित वातावरण तैयार करता है जिससे विद्यार्थियों में प्रेम व देश भक्ति विकसित होती है तथा घृणा व कुदृष्टिकोण की समाप्ति होती है।

4. **नैतिक कर्त्तव्य :** एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को नैतिक कर्त्तव्यों का पाठ पढ़ाता है जिसके माध्यम से वह विद्यार्थियों के दिलों में देशभक्ति व देश प्रेम का दीपक जलाता है।
5. **आदर्श :** अध्यापक हमेशा अपने विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श होता है। इसलिए अध्यापक को स्वयं एक आदर्श बनना चाहिए तथा विद्यार्थियों को आदर्श बनकर प्रेम भक्ति, स्नेह का पाठ पढ़ाना चाहिए। इस प्रकार शिक्षक वर्ग एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और कर रहा है।
6. **सामाजिक कुरीतियों का विरोधः** अध्यापक वर्ग सामाजिक कुरीतियों के द्वारा देश में होने वाले हानिकारक प्रभाव से अवगत करवाता है जिसे विद्यार्थियों को अच्छाई व बुराई का ज्ञान होता है व देश में इन कुरीतियों को दूर करने के लिए उन्हें प्रेरणा मिलती है जिसके कारण इनमें राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न होती है।
7. **जीवन दर्शन :** अध्यापक के जीवन दर्शन का विद्यार्थियों के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। अध्यापक के जीवन दर्शन में राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय एकता व भावनात्मक एकता की झलक दिखाई देनी चाहिए। बच्चों के ऊपर इस दर्शन का प्रभाव प्रेम व एकता के प्रभाव के रूप में दिखाई पड़ता है।
8. **भाषा नीति का विकास :** अध्यापक विद्यार्थियों में भाषा नीति का विकास करता है। भाषा नीति द्वारा अध्यापक अपने विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भाषा को प्रोत्साहित करके राष्ट्रीय प्रेम जागृत करता है।
9. **साहित्य का ज्ञान :** अध्यापक अपने विद्यार्थियों को साहित्य का ज्ञान कराता है तथा साहित्य की सहायता से ही राष्ट्रीय प्रेम व राष्ट्रीय भक्ति का बोध विद्यार्थियों को कराता है।
10. **महत्त्वपूर्ण दिवसों को मनाना :** स्कूलों व कालेजों में महत्त्वपूर्ण दिवस जैसे– स्वतंत्रता दिवस, शहीदी दिवस, बाल दिवस, महावीर जयंती, ईद, दिवाली, होली, दशहरा, रविदास जयंती व शहीदी दिवसों का आयोजन किया जाता है जिसकी वजह से विद्यार्थियों में प्रेम, भाईचारा, एकता, आदम्यता, सहनशीलता आदि मूल्यों का विकास होता है जिसमें राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय प्रेम को प्रोत्साहन मिलता है।
11. **संकीर्णता से ऊपर उठना :** अध्यापक का जीवन उदार होना चाहिए तथा संकीर्णता का नामोनिशान अध्यापक के जीवन में नहीं होना चाहिए। उदार अध्यापक अपने विद्यार्थियों को उदार बनाते हैं। संकीर्णता को दूर करके, अच्छे विचारों से विद्यार्थियों के जीवन को शुद्ध बनाते हैं जिससे प्रेम व भाईचारे की भावना उत्पन्न होती है तथा राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय प्रेम की भावना भी जागृत होती है।
12. **आलोचनात्मक दृष्टिकोण की समाप्ति :** अध्यापक का राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के लिए विस्तृत दृष्टिकोण होना आवश्यक है। विस्तृत दृष्टिकोण वाले अध्यापक ही राष्ट्रीयता की भावना विद्यार्थियों में विकसित करते हैं। अध्यापक वर्ग बच्चों को राष्ट्रीय हित का पाठ पढ़ाकर ही राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करते हैं।
13. **मातृभाषाः** राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करने के लिए अति आवष्यक है कि अध्यापक मातृभाषा को महत्त्व देकर राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाए तथा इसके

माध्यम से राष्ट्रभाषा को महत्त्व दें। इस प्रकार अध्यापक मातृभाषा के माध्यम से राष्ट्रीय भाषा को महत्त्व देकर, राष्ट्रीयता का पाठ बच्चों को पढ़ाता है।

14. **पाठ्य–सहायक क्रियाओं का आयोजनः** अध्यापक राष्ट्रीय एकता की भावना में सहायक पाठ्य सहायक क्रियाओं का आयोजन करके राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करता है। इस प्रकार के आयोजन से राष्ट्रीयता पनपती है।
15. **उचित समन्वयः** राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास के लिए अध्यापक अपने पाठ्यक्रम में उचित समन्वय बनाए रखता है।
16. **सरकारी कार्यक्रमों का आयोजन :** अध्यापक वर्ग सरकारी कार्यक्रमों का आयोजन अपने स्कूलों में करता है जिससे विद्यार्थियों में प्रेम व सहयोग की भावना का विकास होता है जो राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करती है।
17. **विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान :** अध्यापक वर्ग विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान करवाता है जिससे भाईचारा, सहयोग, प्रेम, स्नेह, संगठन, आदर, सहनशीलता आदि मूल्यों का विकास होता है, साथ में धर्म निरपेक्षता का ज्ञान होता है। इससे अनेक जाति–पाति, धर्मों से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता का बोध होता है और राष्ट्रीय प्रेम व भक्ति की भावना उत्पन्न होती है।
18. **सामाजिक व राष्ट्रीय सेवा :** अध्यापक विद्यार्थियों में सामाजिक व राष्ट्रीय सेवा की भावना का विकास करवाता है। राष्ट्रीय सेवा व सामाजिक सेवा से सम्बन्धित क्रियाओं का आयोजन करके उनको राष्ट्रीय सेवा व समाज सेवा के महत्त्व को समझाकर राष्ट्रीय एकता व प्रेम का पाठ पढ़ाता है।
19. **धार्मिक सहिष्णुता :** धार्मिक सहिष्णुता का पाठ केवल अध्यापक ही बच्चों को पढ़ा सकता है। धार्मिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाकर अध्यापक विद्यार्थियों को सभी धर्मों का आदर करना व अपनी इच्छा से किसी भी धर्म को अपना कर देश के हित को धर्म से ऊपर मानना आदि का उपदेश एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को देता है। इससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना की जागृति होती है तथा उसका विकास होता है।
20. **प्रण देना :** अध्यापक वर्ग विद्यार्थियों को बड़ों का आदर करना, भलाई करना, ईमानदारी रखना, सेवा की भावना रखना, छोटों से प्रेम करना, राष्ट्रीय हित को सर्वप्रथम उच्च स्तर प्रदान करना, भ्रष्टाचार के विरुद्ध, कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाना आदि का प्रण प्रदान करते हैं। इससे विद्यार्थियों में विस्तृत भावना का विकास और संकीर्णता का हनन होता है। इससे राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास होता है।
21. **देश प्रेम की भावना :** देश प्रेम की भावना का अपने विद्यार्थियों में विकास करना एक अच्छे अध्यापक का कर्त्तव्य है। अध्यापक को ही देश के निर्माता की संज्ञा दी गई है। अध्यापक अपने विद्यार्थियों में अपने व्यक्तित्व व क्रिया–कलापों द्वारा देश की आवाज पैदा करता है।
22. **महान पुरुषों की कहानियों द्वारा राष्ट्रीयता की भावना :** अध्यापक अपने विद्यार्थियों को महान पुरुषों, जैसे महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, शहीद भगत सिंह, राजगुरू, तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई, सुखदेव,

लाल बहादुर शास्त्री, सुभाषचन्द्र बोस आदि महान नायकों की कहानियों को सुनाकर देश भक्ति व देश प्रेम की भावना को जागृत करता है।

23. **उचित शिक्षा** : अध्यापक अपने विद्यार्थियों को बिना किसी जातिवाद, धर्मवाद, रंगभेद, सम्प्रदायों या राज्यों के भेदभाव को भूलकर उचित शिक्षा देकर व सभी के साथ मेल–मिलाप करने के बाद एकता का पाठ पढ़ा सकता है। उचित शिक्षा के माध्यम से ही अध्यापक विद्यार्थियों को एकता व देशप्रेम के सूत्र में बांध सकता है।
24. **राष्ट्र गान व शपथ** : अध्यापक प्रत्येक दिन स्कूल में पढ़ाई करने से पहले विद्यार्थियों को शपथ प्रदान करके राष्ट्र गान करवाता है। इससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न होती है।
25. **राष्ट्रीय त्यौहार** : अध्यापक वर्ग अपने स्कूल में लोहड़ी वसंत, तीज, दशहरा, दिवाली आदि का पूर्ण रूप से बड़ी धूमधाम के साथ आयोजन करते हैं तथा मनाते हैं। ये त्योहार बच्चों को और अन्य देशवासियों को आपसी भाईचारा, प्रेम, मान–सम्मान व आदर व सहयोग की भावना का संदेश देते हैं। इससे राष्ट्रीयता का एहसास होता है और राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास होता है।
26. **भाषण प्रतियोगिता** : अध्यापक वर्ग स्कूलों में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करते रहते हैं। उन विषयों पर भाषण प्रतियोगिता करवाते हैं जिनसे विद्यार्थियों को देश की संस्कृति, देश भक्तों का बलिदान, देश की मुसीबतों व कठिनाइयों, व देश के सहयोग आदि के बारे में ज्ञान मिलता है। इससे विद्यार्थियों में देश प्रेम व देश भक्ति का विकास होता है।
27. **खेलकूल प्रतियोगिता** : अध्यापक वर्ग स्कूलों में बच्चों को स्वस्थ रखने की दृष्टि से खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन करवाते रहते हैं तथा साथ में यही खेल राज्य स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाते हैं, जिससे विद्यार्थियों के बीच परस्पर मेलजाल और आपसी सहयोग की भावना का विकास होता है। इससे विद्यार्थियों में राश्ष्ट्रीय सहयोग व एकता की भावना का विकास होता है।
28. **अन्तर्राज्यीय भ्रमण** : विद्यालय में अध्यापक वर्ग अन्तर्राज्यीय भ्रमण का आयोजन करते हैं जिसमें बच्चे राज्यों में घूमते हैं तथा विभिन्न संस्कृतियों, रीति–रिवाजों, प्राकृतिक असमानताओं, राजनैतिक गतिविधियों व आर्थिक गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे उनमें विभिन्नता में एकता का एहसास होता है तथा राष्ट्रीय भावना का विकास होता है।
29. **देश के पहलुओं का ज्ञान** : देश में चल रही शिक्षा के पाठ्यक्रम में देश के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिसको हमारे अध्यापक वर्ग उदाहरण देकर समझाते हैं तथा साथ में इसके महत्त्व को भी बताते हैं। इस कारण विद्यार्थी देश के हर पहलुओं की जानकारी हासिल करते हैं और उनमें देश के प्रति प्रेम व भक्ति की भावना उत्पन्न होती है।
30. **पुस्तकों की जांच** : अध्यापक वर्ग स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों की जांच करते हैं और उसके लिए सुझाव सरकार को देते हैं। सरकार का मुख्य उद्देश्य यह है कि स्कूलों व कालेजों में ऐसी पुस्तकें पढ़ाई जाएं जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिले। अध्यापक वर्ग इस तरह जांच करके राष्ट्रीय एकता प्रदान करने

वाली पुस्तकों को लिखते हैं और देश की अखण्डता को बनाये रखने के लिए सुझाव भी देते हैं। साथ में देश की अखण्डता व एकता को खतरे में डालने वाली पुस्तकों को पाठ्क्रम से हटाने के लिए सरकार को विनम्र प्रार्थना करते हैं।

सुझाव :

अध्यापक को राष्ट्रीय एकता का पाठ पढ़ाने के लिए और कार्य भी करने चाहिए जिनका विवरण निम्नवत् है :

1. बालकों को भारत के आर्थिक विकास का ज्ञान करवाना चाहिए।
2. राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध में महान पुरुषों के जीवन पर भाषण करवाने चाहिए।
3. क्षेत्र भाषा के अतिरिक्त अध्यापक को राष्ट्रीय भाषा पर बल देना चाहिए।
4. बालकों को भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का वर्णन करवाना चाहिए।
5. पाठ्यक्रम में लोकगीतों और कहानियों को भी स्थान देना चाहिए।
6. बालकों में राष्ट्रीय चेतना का विकास करना चाहिए।
7. बालकों को विभिन्न क्षेत्रों की सामाजिक दशाओं तथा विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान करवाना चाहिए।
8. बालकों को धर्म निरपेक्षता का पाठ पढ़ाना चाहिए।
9. विद्यार्थियों को देश के महान नायकों के जीवन का परिचय देना चाहिए।
10. देश भक्ति व देश प्रेम कहानियां भारत के विभिन्न क्षेत्रों से चुनकर व लिखकर विद्यार्थियों को सुनानी चाहिए।
11. अध्यापक वर्ग को चाहिए कि विद्यार्थियों को सामाजिक जीवन की दशाओं का सरलतम ज्ञान देना चाहिए।
12. विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों के साहित्य, भाषाओं तथा संस्कृतियों का तुलनात्मक गहन अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करें तथा अवसर प्रदान करें।
13. विद्यार्थियों को उत्सवों का आयोजन करने व भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
14. विद्यार्थियों को राष्ट्रीय दिवसों को मनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए तथा इनका महत्त्व उनको बताना चाहिए।
15. विद्यार्थियों को राष्ट्रीय पुष्प, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र गान का ज्ञान करवाना चाहिए।
16. विद्यार्थियों को देश की भौगोलिक परिस्थितियों का ज्ञान करवाना चाहिए।
17. विद्यार्थियों को गोष्ठियों तथा समाचार गोष्ठियों का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इन गोष्ठियों का आयोजन समय–समय पर स्कूलों व कालेजों मे करवाना चाहिए।
18. विद्यार्थियों को यह बताना चाहिए कि राष्ट्र हित व्यक्ति हित से बड़ा है। इसलिए व्यक्तिगत हित का त्याग करना चाहिए।
19. देश की सेवा सर्वोत्तम सेवा है, यह पाठ विद्यार्थियों को पढ़ाना चाहिए।
20. विद्यार्थियों को सांस्कृतिक व सामाजिक उपलब्धियों का उचित मूल्यांकन करने का पाठ पढ़ाना चाहिए।
21. स्कूलों में सेमीनार, नाटक व प्रदर्शनियों का आयोजन करवाना चाहिए।

निष्कर्ष :

हमारा देश क्षेत्रवाद, भाषावाद जैसी मानसिकता से प्रेरित होकर अपने देश की अखण्डता को तोड़ने में लगा है। इसका राजनैतिक ढांचा पूरी तरह इतना बदल चुका है कि राजनेताओं का अपने देश की अखण्डता व एकता से पहले अपने व्यक्तिगत

स्वार्थ आने लगे हैं, जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। पहले तो सभी मिलकर स्वतंत्रता की मांग करते थे लेकिन अब एक राज्य दूसरे राज्य से लड़ रहा है। यह घटिया सोच भारत की अखण्डता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। आज तो देश की अखण्डता व एकता बनाए रखना अति आवश्यक है। इसकी अखण्डता व एकता को बनाए रखने के लिए व उसको दिनोंदिन विकास की राह पर लाने के लिए बालक व बालिकाओं, युवक व युवतियों को शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों को राष्ट्रीयता की भावना जागृत व विकसित करनी होगी। इससे वे राष्ट्रीय हित को अपने व्यक्तिगत हित से ज्यादा व महत्त्वपूर्ण समझेंगे, अर्थात राष्ट्रीय हित को महत्त्वपूर्ण स्थान देंगे। पंडित जवाहर लाल नेहरू का कथन है कि हम जो भारतीय गणतंत्र के नागरिक हैं, उन्हें भारतीय जनता में एकता स्थापित करनी है। हमें इस देश को महान राष्ट्र बनाना है। अंत में हम कह सकते हैं कि शिक्षा के माध्यम से, शिक्षक वर्ग जो राष्ट्रीय निर्माता कहलाते हैं, राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास देशवासियों में करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं जिसे वे बखूबी निभा सकते हैं।

सन्दर्भः

1. बंगा, चमनलाल, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, नंगल टाउनः पसरिया पब्लिकेशन।
2. वर्मा, सरोजवाला, चोपड़ा प्रियंका, विद्यालय प्रबन्धन, नई दिल्लीः हितैशी पब्लिशर।
3. गुप्ता, महावीर प्रसाद व वाजपेई प्रमोद कुमार, शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, नई दिल्लीः मार्डन पब्लिकेशन।
4. मोनिका, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, जालंधरः मार्डन पब्लिशर।
5. वालिया, जे.एस., सामाजिक अध्ययन शिक्षण, जालंधरः पौदल पब्लिशर, 2004